बी.एच.आई.सी.-101 : भारत का इतिहास-I
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIC-101**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -101 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) प्राचीन भारतीय साहित्य में पुनर्निर्माण में साहित्यिक व पुरातात्विक स्रोतों का परीक्षण कीजिए। 20

2) नवपाषाण क्रांति से आप क्या समझते हैं? भारत में नवपाषाण संस्कृति के प्रमुख स्थलों का वर्णन कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) ऋग्वैदिक से लेकर उत्तरवैदिक चरण तक धर्म, समाज और अर्थव्यवस्था में हुये परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए। 10

4) प्राचीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर निबन्ध लिखिए। 10

5) मौर्य प्रशासन पर संक्षिप्त में एक नोट लिखिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) पाषाणकालीन चित्रकला 6

7) उत्तर भारत की प्रसिद्ध लौह युग संस्कृतियाँ 6

8) भारतीय दर्शन और इसकी पर्यावरणीय दृष्टि 6

9) सप्तांग सिद्धांत 6

10) प्रारंभिक भारत में महिलाओं की स्थिति 6

1) प्राचीन भारतीय साहित्य में पुनर्निर्माण में साहित्यिक व पुरातात्विक स्रोतों का परीक्षण कीजिए। 20

उत्तर

भूमिका। प्राचीन भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण केवल राजाओं की सूची या युद्धों का क्रम तैयार करना नहीं है। इसका उद्देश्य विभिन्न कालों के समाज, उत्पादन, धार्मिक मान्यताओं, राजनीतिक संस्थाओं, कला और दैनिक जीवन की विश्वसनीय तस्वीर बनाना है। प्रारंभिक भारत के अधिकांश युगों के लिए लगातार लिखे गए समकालीन इतिहास-वृत्तांत उपलब्ध नहीं हैं। अतः इतिहासकार साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोतों को एक-दूसरे के संदर्भ में पढ़ते हैं। प्रत्येक साक्ष्य के रचयिता, समय, प्रयोजन और सीमाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

साहित्यिक स्रोतों का स्वरूप। वैदिक साहित्य में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं। ऋग्वेद से प्रारंभिक वैदिक समाज की पशुधन-आधारित अर्थव्यवस्था, जन-समूहों, देवताओं और यज्ञ-संबंधी परंपराओं की जानकारी मिलती है। बाद के वैदिक ग्रंथ कृषि-विस्तार, सामाजिक विभाजन, राजकीय अनुष्ठानों और दार्शनिक चिंतन के बदलते रूप दिखाते हैं। किंतु धार्मिक मंत्रों को किसी घटना की सीधी रिपोर्ट नहीं मान सकते; वे विशिष्ट समूहों के आदर्श और विश्वास व्यक्त करते हैं।

महाकाव्य एवं स्मृति साहित्य। रामायण और महाभारत में राजनीतिक अधिकार, परिवार, धर्म, युद्ध और सामाजिक आचरण से जुड़े विचार मिलते हैं। दोनों ग्रंथ अनेक चरणों में विकसित हुए; इसलिए उनके प्रत्येक प्रसंग को किसी एक ऐतिहासिक काल का प्रत्यक्ष विवरण मानना गलत होगा। धर्मसूत्र, धर्मशास्त्र और स्मृतियाँ वर्ण, उत्तराधिकार, विवाह तथा शासन के नियामक आदर्श प्रस्तुत करती हैं। ये प्रायः बताते हैं कि समाज कैसा होना चाहिए, न कि प्रत्येक स्थान पर वास्तविक व्यवहार कैसा था। इतिहासकार इन आदर्शों की तुलना अभिलेखों तथा भौतिक साक्ष्यों से करते हैं।

बौद्ध और जैन साहित्य। त्रिपिटक, जातक कथाएँ, जैन आगम और परवर्ती परंपराएँ नगरों, व्यापारियों, श्रमण आंदोलनों, गण-संघों, सामाजिक समूहों तथा नैतिक प्रश्नों पर उपयोगी सामग्री देती हैं। जातकों में तत्कालीन जीवन के अनेक चित्र मिलते हैं, पर उनकी कथात्मक प्रकृति और संकलन-काल का विवेकपूर्ण आकलन जरूरी है। बौद्ध व जैन ग्रंथ धार्मिक समुदायों की अपनी दृष्टि से घटनाएँ प्रस्तुत करते हैं; तुलनात्मक अध्ययन से उनका उपयोग अधिक विश्वसनीय बनता है।

लौकिक साहित्य और विदेशी विवरण। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से राज्य, राजस्व, दंडनीति, जासूसी और आर्थिक नियमन के आदर्श समझने में सहायता मिलती है। उसकी अंतिम रचना-तिथि तथा पाठ-परंपरा जटिल हैं, इसलिए पूरे ग्रंथ को चंद्रगुप्त मौर्य के समय की हूबहू प्रशासनिक रिपोर्ट नहीं माना जाना चाहिए। संगम साहित्य दक्षिण भारत में वीरता, कृषि, व्यापार, प्रमुखों और क्षेत्रीय संस्कृतियों की जानकारी देता है। मेगस्थनीज के विवरण के बाद के उद्धरण तथा चीनी यात्रियों के यात्रा-वृत्तांत भी उपयोगी हैं; विदेशी पर्यवेक्षकों की सीमित भाषा-समझ और बाहरी दृष्टिकोण को ध्यान में रखना पड़ता है।